भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक- मेज़र मेहर दास का योगदान

डॉ. अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि.प्र.)

सार :- (Abstract) भारत की स्वतंत्रता संग्राम में आजाद हिंद फौज़ की लड़ाई 1944 में घमासान युद्ध में वदल गई । इस समय वहादुर ग्रुप के कमाण्ड़र देहरा काँगड़ा (हि.प्र.) के लेफ्टिनेंट कर्नल मेहरदास ने अद्भुत वीरता और युद्ध कौशल का प्रदर्शन दिया। इस लड़ाई में उन्हें "सरदार ए जंग "का खिताव देकर सम्मानित किया गया ।

1.भूमिका:-

आज देश में स्वतंत्रता, समानता, न्याय और मानवता आदि जो मूल्य वचे हैं उनको वचाने का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वो देश के स्वतंत्रता सेनानियों को जाता है । उनमें से एक कर्नल मेहरदास थे ।

2. साहित्य की समीक्षा:-

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिय चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ जो सक्रिय कार्य किए और भारत की आज़ादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है ।

3.उद्देश्य:-

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों, आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं ।

4.कार्यप्रणाली:-

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है । मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है ।

5. योगदान:-

कर्नल मेहरदास का जन्म 9 फरवरी, 1921 को वर्तमान हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा जिला की तहसील देहरा गोपीपुर के गाँव नैहरनपुखर में सेना के ज़मादार पद पर कार्यरत अधिकारी स्व. श्री मोहनलाल के घर हुआ था । प्राथमिक स्तर तक पढ़ाई अपने ही गाँव में करने के पश्चात् माध्यमिक शिक्षा के लिए देहरा गोपीपुर आ गये । अत्याधिक मेधावी होने के कारण किंगजार्ज अँग्रेज़ी स्कूल में पढ़ाई के लिए चुने गये । पैतृक गुणों व विरासत के कारण जालन्धर के इस विद्यालय में पढ़ते समय ही उन्होंने सेना में आवेदन देकर प्रवेश परीक्षा दी और पास होकर सेना में चुने गये ।[1]

1 सितम्बर, 1939 को यूरोप में जर्मनी द्वारा पोलैण्ड पर हमला किया जाने के बाद ब्रिटिश और फ्राँस ने पोलैण्ड को तत्काल सहायता पहुँचाने की घोषणा की । 3 सितम्बर, 1939 को विश्वयुद्ध की घोषणा हो गई । 1941 को जापान का आक्रमण भी ब्रिटिश पर अवश्यंभावी हो चुका था ।[2] जिसके फलस्बरूप 1941 को कर्नल मेहरदास की यूनिट को सिंगापुर जाने का हुक्म हुआ । उनकी यूनिट बम्बई व जलमार्ग के रास्ते से सिंगापुर पहुँची । जहाँ अन्य बटालियन भी पहुँच चुकी थी। वहाँ युद्ध की घोषणा हो जाने पर युद्ध की गति दिन प्रतिदिन बढ़ती चली गई और शत्रु सेना ने ब्रिटिश सेना की दुर्गति कर दी। जापान सेना के युद्ध कौशल के समान ब्रिटिश सेना को घुटने टेकने पड़े और आत्मसमर्पण करना पड़ा । जिसमें सैंकड़ों भारतीय बन्दी बने, जिसमें लैफ्टिनैंट कर्नल मेहरदास भी एक थे ।[3]

21 अक्तूबर, 1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज का नेतृत्व संभाला । उसी दिन 'आज़ाद हिन्द सरकार' की स्थापना की गई तथा नेताजी स्वयं इसके प्रैजीडेन्ट बने । उसके उपरन्त ही उन्होंने भारत की ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध आज़ादी की घोषणा की ।

कर्नल मेहरदास भी काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों के उन चार हज़ार युद्धबन्दियों में आज़ादहिन्द फौज़ के सिपाहियों में सम्मिलित हुए । जिन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के आदेश पर ब्रिटिश सेना को अलविदा कह कर का ही विरूद्ध मोर्चा संभाला था । कर्नल मेहरदास उस समय लैफ्टिनैंट कर्नल के पद पर थे । उनके साथ तहसील तहसील पालमपुर (चढ़ियार) के कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी, धर्मशाला के मेज़र दुर्गामल, कैप्टन राम सिंह ठाकुर आदि आज़ाद हिन्द फ़ौज की सशस्त्र क्राँति में सम्मिलित हुए । जव इन्होंने आज़ाद हिन्द फ़ौज में प्रवेश किया तो गुरिल्ला युद्ध प्रशिक्षण के लिए उन्हें रंगून भेजा गया । वह अपनी सारी उम्र इस निम्नलिखत नारे को अपने जीवन का अंग मानते रहे । -

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा ।" [4]

1944 के आरम्भ में आज़ाद हिन्द फ़ौज की आज़ादी की लड़ाई घमासान युद्ध में बदल गई । 4-5 फरवरी, 1944 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के जवानों को अँग्रेज़ों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा करके अपने देशभक्त और शूरवीर जवानों को आदेश दिया कि -

"दुश्मनों के विरूद्ध हथियार उठाओ, दुश्मन का सीना फाड़कर अपना रास्ता बनाओ और दिल्ली पहुँचो।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने दिल्ली चलो का नारा देकर आज़ाद हिन्द फ़ौज के मतवाले सैनिकों को आगे बढ़ने के आदेश दिये । आज़ाद हिन्द फ़ौज फ़ौज ने चिड़गाँव की सीमा पारकर नागालैण्ड, मणिपुर में प्रवेश किया और तीन महीने तक इम्फाल को घेर कर रखा । आज़ाद हिन्द सरकार की आज़ाद हिन्द फ़ौज ने मणिपुर में मोरंग नामक स्थान पर अपना प्रथम आज़ादी का झण्डा गाड़ा और आज़ाद हिन्द फ़ौज की गुरिल्ला ब्रिगेड को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने स्वंय आराकान युद्ध मोर्चे पर भेजा । इसमें बहादुर ग्रुप के सैकण्ड इन कमाण्ड कैप्टन प्रतापसिंह बक्शी थे ।[5]

लैफ्टिनैंट कर्नल मेहरदास के इस दस्ते में 25 जवान थे । उनके बहादुर ग्रुप के 25 जवान, शत्रु के क्षेत्र में भीतर तक घुस गये। यहीं बावली बाज़ार था । 5 फरवरी, 1944 को इस छोटे यूनिट ने ही एक सौ से अधिक शत्रुओं का खदेड़ दिया तथा छक्के छुड़ा दिये । इस युद्ध में वहुत शत्रु सैनिक मारे गये । इस बहादुर ग्रुप ने एक ओर जहाँ शत्रु सेना का घ्यान बाँटा बहाँ दूसरी ओर उनकी दो डिबिजनों को क्षति पहुँचाई । लैफ्टिनैंट कर्नल मेहरदास के इस दस्ते ने शत्रुओं के दो पुल उड़ा दिये तथा राशन पानी पहुँचाने में व्यावधान उत्पन्न कर दिया । गुरिल्ला साधनों से इस दस्ते ने 5 नम्बर डिविजन के महत्वर्पूण रिकार्ड अपने कब्जे में ले लिये और 7 नम्बर डिविजन को भारी क्षति पहुँचाई ।

1 मार्च, 1944 को राशन और युद्ध सामग्री की कमी के कारण इस ग्रुप को पीछे हटना पड़ा । इस बावली बाज़ार में लड़ते हुए बहादुर ग्रुप के सैनिकों को शत्रु के ब्रिगेड ने घेर लिया । इस समय लैफ्टिनैंट कर्नल मेहरदास तथा अन्य सब जवान भूख से व्याकुल थे । 14 दिन तक पत्तों और जड़ों को खाकर गुजारा करना पड़ा । जब यह सिपाही पर्वतों और घाटियों से होकर लौट रहे थे तो उस समय शत्रु के हवाई जहाज इन पर मंडराने लगे । भारी बमबारी हुई लेकिन वह अपने साथियों सहित सुरक्षित बच गये । बाद में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के सभी सैनिकों को आत्म समर्पण करने का आदेश दिया । इनमें घायल हुए सैनिकों का उपचार जापान के अस्पतालों में हुआ ।[6]

लैफ्टिनैंट कर्नल मेहरदास को आज़ाद हिन्द फ़ौज की इस लड़ाई में बाबली बाज़ार में अभूतपूर्व साहस एवं शौर्य दिखाने के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उन्हें 5 फरवरी, 1944 को 'तमगा ए जंग' खिताब से अलंकृत किया ।[7] 20 जून, 1944 को जापानी सेना और आज़ाद हिन्द फ़ौज को पीछे हटना पड़ा । 1945 को जापान ने हार मान ली तो आज़ाद हिन्द फ़ौज को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और ब्रिटिश सरकार ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया । कैप्टन मेहरदास भी बन्दी बनाए गये । उन्हें जनरल कुजियारा वाली जेल में रखा गया । उस समय उन्हें भेद खोलने के लिए इतनी भयानक यातनाएँ दीं फिर भी दृढ़ इरादे का यह ब्यक्ति बिल्कुल भी टस से मस नहीं हुआ और शत्रुओं के आगे नहीं झुका ।[8]

दिल्ली लालकिला की फ़ौजी अदालत में कर्नल मेहरदास पर अन्य आज़ाद हिन्द फ़ौज के सैनिकों की तरह ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध विध्वंसात्मक कार्य करने के तथाकथित अपराध के लिए मुकद्दमा चला । पंडित जवाहरलाल नेहरू, आसफ़अली व भोलाभाई देसाई आदि वकीलों ने उनके केस लड़े और जीते । 17 फरवरी, 1946 से आज़ाद हिन्द फ़ौज के युद्धबन्दियों की रिहाई होने लगी। इस समय कर्नल मेहरदास भी रिहा हुए और वह अपने पैतृक गाँव आ गये ।[9]

15 अगस्त, 1947 की आज़ादी के बाद कर्नल मेहरदास की क्षमता को ध्यान में रखते हुए इन्हें मध्यप्रदेश में होमगार्डस के कमांडर के रूप में नियुक्त किया गया । 16 दिसम्बर, 1948 को जम्मू हाईकोर्ट के मशहूर जज पंडित श्रीचन्द्र दत्ता की सपुत्री श्रीमती बीना से उनकी शादी हुई ।[10]

6. निष्कर्ष:-

आज़ाद हिन्द फ़ौज का एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी कर्नल मेहरदास 16 दिसम्बर, 1960 को कभी न भुलाया जाने वाला चिरनिद्रा में सो गया ।[11] परन्तु उसकी प्रतिमा उस लोकोक्ति को सार्थक करती है कि –

''कुछ एक बार मरते हैं और उनकी मौत इतिहास में तारीख बनकर रह जाती है,
और कुछ रोज मरते हैं परन्तु कोई एक आंसू बहाने वाला भी नहीं मिलता।''

7. संदर्भ सूची **:-**

1. जनसत्ता: चण्डीगढ़, 18 दिसम्बर, 1993. देखिये, साक्षात्कार: श्रीमती वीनादेवी पत्नी कर्नल मेहरदास,परिशिष्ट (11) पृष्ठ 386. , Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.
2. राई, एम.पी.: वीर जाति की अमर कहानी, नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 126.; देखिये,; हिमाचल प्रदेश सरकार: स्वाधीनता का संकल्प, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 45.
3. जनसत्ता: चण्डीगढ़, 18 दिसम्बर, 1993.
4. हिमाचल प्रदेश सरकार: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 160.; देखिये, संसारचन्द प्रभाकर :हिमाचली इतिहास के सुर्ख पन्ने, नीरज प्रकाशन, फतेहपुर काँगड़ा, 2002 पृष्ठ 136.
5 हिमाचल प्रदेश सरकार: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 160.
6. संसारचन्द प्रभाकर :हिमाचली इतिहास के सुर्ख पन्ने, नीरज प्रकाशन, फतेहपुर काँगड़ा, 2002 पृष्ठ 136.; देखिये, जनसत्ता: चण्डीगढ़, 18 दिसम्बर, 1993; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: स्मृतियाँ, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1968 पृष्ठ 74.
7. हिमाचल प्रदेश सरकार: हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 153.; देखिये, हिन्दु: जालन्धर, 13 जनवरी, 1993., देखिये, जनसत्ता: चण्डीगढ़, 21 मार्च, 1993, 18 दिसम्बर, 1993.
8. संसारचन्द प्रभाकर :हिमाचली इतिहास के सुर्ख पन्ने, नीरज प्रकाशन, फतेहपुर काँगड़ा, 2002 पृष्ठ 136.
9. जनसत्ता: चण्डीगढ़, 18 दिसम्बर, 1993.
10. साक्षात्कार: श्रीमती वीनादेवी पत्नी कर्नल मेहरदास,परिशिष्ट (11) पृष्ठ 386, Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.; देखिये, जनसत्ता: चण्डीगढ़, 18 दिसम्बर, 1993
11. साक्षात्कार: श्रीमती वीनादेवी पत्नी कर्नल मेहरदास, परिशिष्ट (11) पृष्ठ 386, Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.